मानव दखल से बचा नहीं धरती का कोई कोना

नदियों के प्राकृतिक बहाव को रोककर बांध बनाना तो केवल एक उदाहरण है, अगर एक ताज़ा रिपोर्ट पर विश्वास किया जाए तो इस धरती पर ऐसे स्थान नाम मात्र को रह गए हैं, जहां मनुष्य का दखल न रह गया हो, चाहे वह जंगल हों, समुद्र हों या फिर नदियां और पहाड़।

विज्ञान पत्रिका 'साइंस' में अमेरिका के नॉन प्राफिट ग्रुप नेचर कंज़र्वेंसी में मुख्य वैज्ञानिक पीटर कैरीवा द्वारा प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार अब ऐसी कोई भी चीज़ या स्थान नहीं रह गया है जिसके साथ मनुष्य ने छेड़छाड़ न की हो। वे लिखते हैं, 'अब इस बात पर ज़ोर देने का कोई मतलब नहीं है कि प्रकृति को मनुष्य के दखल से बचाया जाए। अब संरक्षणवादियों का ज़ोर इस बात पर होना चाहिए कि इस पूरी दुनिया को कैसे बेहतर ढंग से समझकर उसका उचित प्रबंधन किया जाए।'

रिपोर्ट के मुताबिक वर्ष 1995 में धरती का 17 फीसदी हिस्सा वास्तव में उजाड़ या जंगल कहा जा सकता था। उपग्रह द्वारा ली गई तस्वीरों के अनुसार इन जगहों में मानव, फसल, सड़क या रात्रिकालीन प्रकाश की कोई उपस्थिति नहीं पाई गई थी, लेकिन अब करीब एक दशक बाद इन क्षेत्रों में भी मानव की उपस्थिति हद से कहीं ज़्यादा बढ़ गई है।

यह रिपोर्ट न केवल हमारी आंखें खोलती है, बल्कि हमें भविष्य के प्रति आगाह भी करती है। रिपोर्ट बताती है कि धरती की सतह के आधे हिस्से का इस्तेमाल खेती या चारागाह के रूप में किया जा रहा है। आधे से अधिक जंगलों का सफाया कर उन्हें समतल बनाया जा चुका है। कई महाद्वीपों पर पाए जाने वाले ज़मीनी स्तनधारियों का अस्तित्व समाप्त हो चुका है। धरती ही नहीं, समुद्रों को भी नहीं छोड़ा गया है। जहाज़रानी मार्गों ने सभी सागरों को रौंदकर रख दिया है। तटों के प्राकृतिक स्वरूप के साथ भी व्यापक पैमाने पर छेड़छाड़ की गई है। अकेले यूरोप में ही करीब 22 हज़ार किलोमीटर लंबे तटों को पक्का बना दिया गया है।

कैरीवा कहते हैं कि मानव दखल के उपर्युक्त लक्षण तो साफ नज़र आते हैं, लेकिन कई ऐसे परिवर्तन भी हैं जो नज़र नहीं आने के बावजूद घटित हुए हैं। वे कहते हैं कि अब प्रकृति पर मनुष्य की पसंद भी हावी होने लगी है। जैसे किन प्राणियों को संरक्षित करना है और किनका उपभोग करना है, यह भी तय करना मनुष्य ने काफी पहले ही शुरू कर दिया था। वे बताते हैं कि नमीबिया में 1970 के पहले मछुआरों की पकड़ में जैली फिश काफी कम मात्रा में आती थी। लेकिन अब व्यावसायिक मछलियों की तुलना में यही ज़्यादा पकड़ में आती हैं। इससे वहां के इकोसिस्टम को गंभीर क्षति पहुंच रही है।

रिपोर्ट राष्ट्रीय उद्यानों और अभयारण्यों की प्रासंगिकता पर भी सवाल उठाती है। उसके अनुसार इन क्षेत्रों में आने वाले पर्यटकों की वजह से इनकी प्रकृति पूरी तरह बदल गई है। रिपोर्ट में जापान के फूजी हकोन इजू उद्यान की मिसाल दी गई है जो विश्व के प्रसिद्ध राष्ट्रीय उद्यानों में शामिल है। यहां हर साल बड़ी संख्या में पर्यटक आते हैं। इनकी सुविधा के लिए यहां स्पा, होटल्स, गोल्फ मैदान इत्यादि भी चले आए हैं जिससे इस उद्यान के इकोसिस्टम को गंभीर रूप से नुकसान पहुंचा है।

रिपोर्ट कहती है कि प्रकृति में दखल देने का रुझान जनसंख्या वृद्धि के साथ और बढ़ेगा। अतः ज़रूरत प्रकृति के ऐसे प्रबंधन की है कि मनुष्य और प्रकृति दोनों साथ-साथ फल-फूल सकें। इसके अलावा और कोई चारा भी नहीं है। ***(स्रोत फीचर्स)***